UPHIN/2016/67435 | ISSN–2456–0413
जनवरी – मार्च 2024 | मूल्य ₹ 100/-

पीयर रिव्यूड हिन्दी तिमाही पत्रिका

पतहर

बौद्ध शिक्षा दर्शन विशेषांक

बौद्ध शिक्षा दर्शन विशेषांक

छाया चित्रों में संगोष्ठी

पतहर ISSN–2456–0413 जनवरी-मार्च 2024

पीयर रिव्यूड हिन्दी तिमाही पत्रिका

पतहर

वर्ष 09 अंक 01
जनवरी – मार्च 2024
पृष्ठ 92 मूल्य ₹100

ISSN-2456-0413

प्रबन्ध सम्पादक
चक्रपाणि ओझा
सम्पादक
विभूति नारायण ओझा
सहायक सम्पादक
डॉ. कमलेश कुमार यादव

सम्पादक मण्डल

- डॉ. उन्मेष कुमार सिन्हा
- डॉ. विजय आनंद मिश्र
- डॉ संदीप कुमार सिंह

संपादन सहयोग

- डॉ. अपर्णा मिश्रा
- डॉ. इतेन्द्रधर दुबे

Email-hindipatahar@gmail.com

Mob. : 09450740268

http://patahar.blogspot.com/?m=1
www.notnul.com

दिल्ली सम्पर्क

स्वदेश सिन्हा
103 B, पाकेट ए- 1,
मयूर विहार फेज़ - 3, दिल्ली -110096

पतहर, स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक विभूति नारायण ओझा द्वारा ज्योति ऑफसेट प्रेस सलेमपुर देवरिया से मुद्रित एवं कार्यालय ग्राम बहादुरपुर पोस्ट बड़हरा (खुखुन्दू) जिला देवरिया से प्रकाशित।

सम्पादक- विभूति नारायण ओझा

प्रकाशित सामग्री से सम्पादक/ प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवादास्पद मामले देवरिया न्यायालय के अधीन होगा।

UPHIN/2016/67435

पीयर रिव्यूड टीम

- **प्रो. चितरंजन मिश्र,**
  पूर्व प्रति कुलपति, हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा।
- **प्रो. मुरली मनोहर पाठक,**
  कुलपति , श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
- **प्रो. रामदरश राय,**
  कृतकार्य आचार्य, हिंदी विभाग एवं निदेशक पत्रकारिता संस्थान, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **डॉ विक्रम मिश्र,**
  सेवानिवृत्त उपाचार्य, हिंदी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **प्रो. अरविंद त्रिपाठी,**
  कृतकार्य आचार्य, हिंदी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **प्रो. चन्द्रेश्वर,**
  कृत आचार्य, एम.एल.के.पी.जी. कॉलेज, बलरामपुर
- **प्रो. अंजुमन आरा,**
  अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, रेवेंशा विश्वविद्यालय, कटक, उड़ीसा।
- **प्रो. अजय कुमार शुक्ला,**
  अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **डॉ. सचिन गपाट,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय मुंबई।
- **डॉ. मधुसूदन सिंह,**
  सहायक आचार्य, दिग्विजय नाथ एलटी प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोरखपुर।
- **डॉ. बसुंधरा उपाध्याय,**
  सहायक आचार्य, हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।
- **डॉ. लक्ष्मी मिश्रा,**
  सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **डॉ. अजीत प्रियदर्शी,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, डीएवी पीजी कॉलेज लखनऊ।
- **डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज पश्चिम बंगाल।
- **डॉ. प्रदीप त्रिपाठी,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक, सिक्किम।
- **डॉ बिपिन कुमार यादव,**
  सहायक आचार्य, जेएलएन पीजी कालेज, महराजगंज।

खाता विवरण – पतहर, खाता सं. : 98742200010701
IFSC : CNRB0019874, केनरा बैंक, खुखुन्दू, देवरिया

खाता विवरण – विभूति नारायण ओझा, खाता सं. : 98742200042158,
IFSC Code : CNRB0019874, केनरा बैंक, खुखुन्दू, देवरिया

सदस्यता शुल्क विवरण पृष्ट सं. 09 पर देखें

इस अंक में

❖ **सम्पादकीय** 3

❖ **संगोष्ठी संयोजिका की कलम से** 4

❖ **शोध आलेख**

- **आधुनिक परिप्रेक्ष्य में थेरी गाथा के वैचारिक दर्शन की प्रासंगिकता** 6
  – संजय यादव
- **बौद्ध धर्म एवं वैश्विक शांति** 10
  – डॉ० विजय लक्ष्मी सिंह
- **नरेंद्र मोदी एवं आध्यात्म** 19
  – श्रीमती स्वप्निल पाण्डेय
- **बौद्ध-मूर्तिकला में भाव, लावण्य और दर्शन** 24
  – डॉ. रेखा रानी शर्मा
- **बौद्ध रामकथा: स्वरूप एवं प्रतिपाद्य** 55
  – प्रो. बीर पाल सिंह यादव

❖ **शोध पत्र**

- **आधुनिक शिक्षा में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता एवं उपादेयता** 11
  – तेज बहादुर /प्रो. उमेश प्रसाद यादव
- **बौद्ध दर्शन में नागार्जुन के शून्यवाद की अवधारणा** 14
  – सन्तोष कुमार प्रजापति/प्रो. (डॉ.) अर्चना मिश्रा
- **वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बौद्ध शिक्षा की प्रासंगिकता** 21
  – स्मिता दूबे/डॉ. रश्मि श्रीवास्तव
- **वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में बौद्ध शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता** 27
  – पप्पू/प्रो. (डॉ.) अर्चना मिश्रा
- **बौद्ध दर्शन में राजनीतिक चिन्तन** 31
  – डॉ. प्रीति त्रिपाठी
- **बौद्ध दर्शन की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में प्रांसगिकता** 35
  – डॉ. नीरू श्रीवास्तव
- **आधुनिक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में बौद्ध शिक्षा** 37
  – निकिता गुप्ता
- **पालि धम्मपदट्ठकथा में अभिव्यक्त बौद्ध शिक्षा एवं दर्शन का आधुनिक संदर्भ में मूल्यांकन** 41
  – कृष्ण कुमार शाह
- **बौद्ध कालीन शिक्षा दर्शन और योग शिक्षा** 45
  – कुँवर रिपुदमन सिंह
- **बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं उसकी वर्तमान में उपयोगिता** 48
  – डॉ० फूलचन्द यादव
- **बौद्धकालीन शिक्षा की आधुनिक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता** 50
  – अनुप्रिया सिंह
- **मानव उत्थान हेतु बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं संतुलित दृष्टिकोण** 52
  – आराधना श्रीवास्तव

❖ **Research Paper**

- **Contribution of Buddhism to the Indian Culture** 58
  – Ranjana Singh/Prof. M.C. Shrivastava
- **Buddhist Perspectives On Environmental Ethics** 60
  – Anant Kumar Pathak
- **Buddhism And its Relevance in Modern World** 66
  – Sneha Yadav
- **Relevance and Applicability of Buddhist Principles In Modern Education** 69
  – Gulsheen Parvez
- **Buddhist Educational Philosophy : Challenges And Solutions** 73
  – Dr. Madhurima Tiwari/Dr. Mamata Tiwari
- **Role of Buddhism in the Development of Indian Education** 76
  – Anshika Jaiswal
- **Buddhist Education Phylosophy and Balanced Approach** 80
  – Khushi Singh
- **Buddhist philosophy an ideal source of world peace** 83
  – Tahreem Fatima

❖ **Seminar Report** 86
  – Dr. Mamta Tiwari

सम्पादकीय

ऐसे समय में जब समूची दुनिया हिंसा, युद्ध और नफरत के दौर से गुजर रही है। हथियारों की खरीद-फरोख्त बढ़ गई है, प्रेम और अहिंसा जैसे मूल्य संकट में हैं, मातृभाषाओं पर अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है । दुनिया भर में दु:ख और गरीबी बढ़ रही है, खुशहाली का रास्ता लगातार घट रहा है। वर्तमान व्यवस्था लोगों के दुखों को समाप्त कर पाने में असमर्थ हो चुकी है। दुनिया भर में पूंजीवादी साम्राज्यवादी शक्तियां युद्ध का वातावरण बना रही हैं, सीमाओं पर तनाव व्याप्त है। हथियारों का बाजार काफी बढ़ चुका है तब हमें शताब्दियों पूर्व के उस महामानव महात्मा बुद्ध के महान विचारों और शिक्षाओं से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने की जरूरत है। हमारे समय की गंभीर चुनौतियों से निपटने में बौद्ध दर्शन निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होगा।

कपिलवस्तु के विशाल राजमहल को त्याग देने वाले सिद्धार्थ (बुद्ध) ने सर्वप्रथम दु:ख, भूख और गरीबी को पहचानने का न सिर्फ काम किया था बल्कि उसके कारणों को भी बताया और दुख से मुक्त होने का मार्ग भी सुझाया । जिसे अष्टांगिक मार्ग के नाम से हम सब जानते हैं। सदियों पूर्व महात्मा बुद्ध के परिवर्तनकारी विचारों ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया था। हजारों वर्ष बीतने के बाद भी उनके विचारों को मानने वाले अनुयायी भारत समेत पूरी दुनिया में फैले हैं। बुद्ध ने अपने समय के आडम्बरों, कर्मकांडों, हिंसा आधारित यज्ञ आदि की जगह एक ऐसा धर्म स्थापित किया जिसके केंद्र में अहिंसा, करुणा, दया, बराबरी जैसे मूल्य थे। बौद्ध धर्म की शिक्षा व्यवस्था में सभी के लिए दरवाजे खुले थे। बौद्ध काल में जनभाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था दिखलाई पड़ती है। आज शिक्षा में अंग्रेजी के वर्चस्व को स्थापित किया जा रहा है तब बुद्ध कालीन उस शिक्षा व्यवस्था की तरफ देखना जरूरी लगता है कि कैसे उस समय संस्कृत जैसी वर्चस्व वाली भाषा के सामने जन भाषा में सभी के लिए समान शिक्षा की बात कही गई थी। उनकी शिक्षा व्यवस्था में जाति, धर्म, लिंग तथा किसी भी तरह की गैर बराबरी नहीं दिखती है। जबकि हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था गैर बराबरी से ग्रस्त है। बच्चों पर असमानता का दुष्प्रभाव सीधे तौर पर देखा जा सकता है। बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था से हम बहुत कुछ आज सीख सकते हैं। हमारा समाज प्रेम और करुणा पर आधारित रहा है। हम आज नफरत और संवेदनहीनता के दौर से गुजर रहे हैं। हर रोज समाज में नफरत व द्वेष की खबरें सुनाई दे रही हैं। संवेदनहीनता इस कदर हावी है कि आए दिन क्रूरता की हदें पार कर देने वाली हृदयविदारक घटनाएं मन को विचलित कर दे रही हैं। सहनशीलता की क्षमता लगातार कम होती जा रही है। बच्चे, बच्चियां, महिलाएं, पुरुष, वनस्पतियां, नदी, पहाड़, पशु-पक्षी सब इन क्रूरताओं की भेंट चढ़ते जा रहे हैं। नजदीकी मानवीय रिश्ते भी हर पल कलंकित होते हम देख सकते हैं। आखिर ऐसा क्यों है? ऐसा शायद इसलिए है कि हमने बुद्ध के विचारों और शिक्षाओं को पढ़ना छोड़ दिया है।

हमने उनको भी अनेक भगवानों की तरह मंदिरों में पूजा करने के लिए बंद कर रखा है। जबकि बुद्ध ने हमेशा मूर्ति पूजा और कर्म-कांड का पुरजोर विरोध किया था। उन्होंने अपने अनुयायियों को कहा था कि मेरे उपदेशों पर विश्वास रखो, बुद्धि से उन्हें समझने की कोशिश करो और हर एक उपदेश को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करो। ऐसे क्रूर और अमानवीय होते समय में हमारे सामने बुद्ध जैसे महामानव के क्रांतिकारी विचार एक मशाल की तरह हमारे मार्ग को मनुष्यता के करीब ले जाने में सहायक सिद्ध होंगे। ऐसे में हमें बुद्ध के महान विचारों को अपने अध्ययन और अध्यापन का हिस्सा बनाते हुए जीवन में धारण करने की आवश्यकता है। तभी हम सच्चे अर्थों में बुद्ध की इस धरा को और ज्यादा मानवीय बना पाएंगे। आज भी जीवन यापन के लिए अधिकांश आबादी सरकारी योजनाओं पर ही निर्भर है । वर्ल्ड इनइक्वलिटी लैब (विश्व असमानता रिपोर्ट) के अनुसार 2022-23 में देश की अमीरी और गरीबी के बीच की खाई पिछले सौ साल में सबसे ज्यादा बढ़ी है। परिणाम स्वरुप देश की व्यापक आबादी बुनियादी जरूरतों के लिए भी संघर्षरत है। इस माहौल में बुद्ध की सम्यक दृष्टि प्रासंगिक दिखती है। जहां वे यह मानते हैं कि दु:ख तो है लेकिन अकारण नहीं है,दु:ख दूर किया जा सकता है और इसके उपाय भी हैं। बुद्ध के दिखाएं मार्ग पर चलकर हमें हर तरह की समस्याओं के समाधान के लिए तैयारी करनी होगी । साथ ही सत्य, अहिंसा, करुणा, न्याय, प्रेम और बंधुता आदि मानवीय मूल्यों की रक्षा करने के लिए हमें बुद्ध के महान विचारों से प्रेरणा ग्रहण करते हुए एक ऐसी दुनिया बनानी होगी जहां जाति, धर्म के नाम पर नफरत ना हो मनुष्य के द्वारा मनुष्य का शोषण ना हो। सबको बराबरी और सम्मानजनक जीवन उपलब्ध हो, हमारा समाज प्रगतिशील एवं मानवीय मूल्य वाला बने तथा मनुष्यता के करीब हो तभी हम सच्चे अर्थों में महात्मा बुद्ध और उनके विचारों को बचा पाएंगे।

पतहर पत्रिका का यह अंक महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी की उपलब्धियों को सहेजने का एक प्रयास है। चंद्रकांति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर व राजकीय बौद्ध संग्रहालय गोरखपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय इस राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय महत्व की संगोष्ठी में आए विद्वतजन के विचारों को संग्रहित कर छात्र-छात्राओं, अध्येताओं के लिए एक उपयोगी अंक तैयार करने में मिले सहयोग के लिए महाविद्यालय परिवार, आयोजन समिति और सभी शुभचिन्तको के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए यह उम्मीद की जाती है कि आप सभी पाठक इस विशेष अंक के बारे में अपनी राय से हमें अवगत कराएंगे । इस अंक को तैयार करने में जिन प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष व्यक्तियों, संस्थाओं ने सहयोग किया है सबके प्रति पुनः पतहर परिवार की तरफ से कोटिश: आभार।

• **विभूति नारायण ओझा,** सम्पादक

संगोष्ठी संयोजिका की कलम से

डॉ. अपर्णा मिश्रा

आधुनिक विश्व के गतिशील परिदृश्य के बीच बौद्ध शिक्षा दर्शन के सिद्वांत संतुलित विश्व की वकालत करते हुए जटिल चुनौतियों का समाधान करने हेतु एक आकर्षक रुपरेखा प्रदान करते हैं। बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित यह दर्शन समकालीन समस्याओं से निवारण के लिये आवश्यक स्तम्भों के रूप में अर्न्तसम्बन्ध नैतिक आचरण और आन्तरिक सद्भाव को रेखांकित करता है। प्रौद्योगिकी के प्रसार पर्यावरणीय संकट और सामाजिक जटिलताओं के साथ बौद्ध शिक्षा दर्शन के सिद्धांत, जागरुकता, करुणा एवं समग्र विकास को विकसित करने के लिये व्यापक मार्ग दर्शन प्रदान करते हैं। आज जागरूकता और सहानुभूति के महत्व पर जोर देते हुए यह दर्शन ज्ञान और लचीलेपन के माध्यम से समसामयिक मुद्दों से जुड़ने के लिये प्रोत्साहित करता है। पारम्परिक बौद्ध ज्ञान को समकालीन शैक्षिक पद्धतियों के साथ एकीकृत करके, इस दर्शन का उद्देश्य व्यक्तियों के आधुनिक युग की जटिलताओं को उद्देश्य एवं अवबोध के साथ पथ-प्रदर्शित करते हुए एक संतुलित दृष्टिकोण एवं आन्तरिक शान्ति को बढ़ावा देने पर जोर देना है।

आज विश्व में हिंसा और भेदभाव बढ़ रहा है, मनुष्य विचारों से हिंसात्मक होता जा रहा है। आतंकवाद या फिर दो देशों के बीच युद्ध जैसे हालात हैं। ऐसी विकट परिस्थिति में बौद्ध दर्शन कहीं ज्यादा प्रासंगिक हो जाता है। व्यक्ति के विनाशकारी विचारों को बदलना और उन पर नियंत्रण रखना बहुत जरूरी है। लगभग ढाई हजार साल पहले बुद्ध ने मानवीय प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हुए कहा था कि मनुष्य का मन ही कर्मो का नियंता है। इसलिये मानव की गलत प्रवृतियों को नियंत्रित करने के लिये उसके मन में सदविचारों का प्रवाह कर उसे सद्मार्ग पर ले जाना जरूरी है। उन्होंने यह सद्मार्ग बौद्ध धर्म के रूप में दिया था। अतः आज मानव-मात्र की कुप्रवृतियों, जैसे-हिंसा, शत्रुता, द्वेष, लोभ आादि मुक्ति पाने के लिये बौद्ध दर्शन को समझने की जरुरत है।

इन्हीं उपर्युक्त समस्याओं के विचार विमर्श, चिन्तन-मनन एवं समाधान हेतु संस्कृति विभाग उ०प्र० द्वारा अनुदानित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 16-17 दिसम्बर 2023 को "बौद्ध शिक्षा दर्शन: आधुनिक विश्व की जटिल चुनौतियाँ एवं संतुलित दृष्टिकोण" विषय पर चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी०जी० कॉलेज गोरखपुर और राजकीय बौद्ध संग्रहालय के संयुक्त तत्वावधान में बी०एड्० विभाग, चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी०जी० कॉलेज, गोरखपुर परिसर में किया गया। इस संगोष्ठी का उद्देश्य–

- छात्रों को गम्भीर चिन्तन के लिये प्रोत्साहित करना।
- सभी जीवित प्राणियों के प्रति करुणा, सहानुभूति समझ एवं परोपकारिता की संस्कृति को बढ़ावा देना।
- ज्ञान से परिपूर्ण सोच को बढावा देना।
- आत्म जागरुकता एवं आध्यात्मिक विकास द्वारा आंतरिक शान्ति की खोज हेतु मार्ग दर्शन करना।
- विश्वस्तरीय सम्बन्ध और परस्पर निर्भरता की समझ को बढावा देना।

इस द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य-विषय से सम्बन्धित निम्नलिखित उपविषयों तथा अन्य अध्ययनों पर विचार- विमर्श किया गया -

- आधुनिक शिक्षा में बौद्ध सिद्धांतों की प्रासंगिकता एवं प्रयोज्यता।
- आधुनिक शिक्षा प्रणाली में बौद्ध दर्शन के सिद्धांतों की अनुकूलता का विश्लेषण।
- बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं संतुलित दृष्टिकोण।
- बौद्ध शिक्षा दर्शन एवं समकालीन चुनैतियॉ।
- आधुनिक शिक्षा की चुनौतियॉ एवं बौद्ध दर्शन।
- सामाजिक समानता एवं समरसता के परिप्रेक्ष्य में बौद्ध दर्शन एवं विश्वशांति।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परि-प्रेक्ष्य में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रस्ताव, प्रेषण, आयोजन की स्वीकृति, स्मारिका, मुद्रण, संगोष्ठी संचालन एवं कार्यवृत्त के प्रकाशन की सफलता परिणति तक मार्गदर्शन, सहयोग, उत्साहवर्द्धन करने वाले सभी विद्वतजन एवं सहयोगियों के प्रति हृदय से आभारी हूँ। जिनकी प्रेरणा से राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन एवं कार्यवृत्त के रूप में इस